२. मुहावरे

अर्थ—मुहावरा अरबी भाषा का शब्द है। इसका अर्थ है—'परस्पर बात-चीत और सवाल-जवाब करना।' इसे अंग्रेजी में 'इडियम' कहते हैं। संस्कृत में इस शब्द के यथार्थ को घोषित करने वाला कोई शब्द नहीं है। कुछ विद्वानों ने 'वाग्रीति' या 'रमणीय प्रयोग' का व्यवहार इसके लिए किया है, परन्तु वास्तव में ये शब्द उपयुक्त नहीं जँचते, क्योंकि इनसे 'मुहावरे' के भाव का सम्यक् प्रकाशन नहीं होता।

अरबी भाषा में मुहावरा शब्द का अर्थ सीमित तथा संकुचित है, किन्तु हिन्दी और उर्दू में यह विकसित होकर व्यापक भाव को द्योतित करता है। मुहावरे के अर्थ में अभिधेयार्थ से कुछ विभिन्नता होती है। अतः इसके अर्थ की सिद्धि लक्षणा और व्यञ्जना शक्तियों के ऊपर अवलम्बित रहती है। उदाहरण के लिए 'नव दो ग्यारह होना' इस मुहावरे को लीजिए। इसका अभिधेयार्थ स्पष्ट है। परन्तु इस मुहावरे का अर्थ है चल देना, भाग जाना आदि। यह भाव अभिधा या लक्षणा से द्योतित न होकर व्यञ्जना शक्ति के द्वारा प्रकट होता है। दूसरा मुहावरा है 'नाकों चना चबाना' जिसका अर्थ है बड़ी कठिनाई से किसी कार्य को सम्पादित करना। चना चबाने का काम मुँह करता है नाक नहीं। नाक से इसे चबाना असम्भव कार्य है। अतः लक्षणा शक्ति के द्वारा इस मुहावरे का अर्थ हुआ किसी काम को बड़ी कठिनता से करना। इसी प्रकार अन्य मुहावरों में भी यही बात पायी जाती है।

मुहावरों की उत्पत्ति—मुहावरों की उत्पत्ति के सम्बन्ध में पण्डित अयोध्या सिंह उपाध्याय लिखते हैं कि "मनुष्य के कार्यक्षेत्र विस्तृत हैं। उसके मानसिक भाव भी अनन्त हैं। घटना और कार्य-कारण परम्परा से जैसे असंख्य वाक्यों की उत्पत्ति होती है उसी प्रकार मुहावरों की भी। अनेक अवसर ऐसे उपस्थित होते हैं जब मनुष्य अपने मन के भावों को कारण विशेष से संकेत अथवा इंगित किंवा व्यंग द्वारा प्रकट करना चाहता है। कभी कई एक ऐसे भावों को थोड़े शब्दों में विवृत करने का उद्योग करता है, जिसके अधिक लम्बे, चौड़े वाक्यों का जाल छिन्न करना उसे अभीष्ट होता है। प्रायः हास, परिहास, घृणा, आवेग, उत्साह आदि के अवसर पर उस प्रवृत्ति के अनुकूल वाक्य-योजना होती देखी जाती है। सामयिक अवस्था और परिस्थिति का भी वाक्य विन्यास पर बहुत कुछ प्रभाव पड़ता है और इसी प्रकार के साधनों से मुहावरों का आविर्भाव होता है।"[१]

Scanned with CamScanner

परम्परा तथा व्यापकत्व—मुहावरों का इतिहास भी उतना ही प्राचीन है जितना भाषा की उत्पत्ति का। संस्कृत साहित्य में इनका प्रचुर प्रयोग उपलब्ध होता है। संस्कृत महाकाव्यों तथा नाटकों में ये विशेष रूप से व्यवहृत हुए हैं। 'सूचिभेद्यं तमः' की चर्चा पहिले की जा चुकी है। अत्यन्त शीघ्रता से रात बीत जाने के लिए "अक्ष्णोः प्रभातमासीत्" का प्रयोग पाया जाता है। किसी बात को सामने देखते हुए भी उसके अस्तित्व को न स्वीकार करने के लिए 'गजनिमीलिका' का व्यवहार पण्डित लोग किया करते हैं। संस्कृत में कुछ ऐसे भी मुहावरे हैं जिनकी परम्परा को राष्ट्रभाषा हिन्दी भी अक्षुण्ण बनाये हुए है। बिना समझे-बूझे अन्धविश्वास के कारण किसी कार्य को सामूहिक रूप से करने के लिए 'गड्डलिका प्रवाहः' को प्रयुक्त किया जाता है। यह मुहावरा 'भेड़िया धसान' के रूप में हिन्दी में वर्तमान है। प्राकृत तथा पालि भाषा में भी मुहावरे पाये जाते हैं, परन्तु स्थानाभाव के कारण उनका विवेचन यहाँ सम्भव नहीं।

राष्ट्रभाषा हिन्दी में मुहावरों की संख्या बहुत ही अधिक है। सिर से पैर तक शरीर का कोई भी अंग ऐसा नहीं है जिससे सम्बद्ध दर्जनों मुहावरे न हों। कवि सम्राट् पं० अयोध्यासिंह उपाध्याय ने अपनी बोलचाल नामक पस्तक[1] में इन मुहावरों का पद्यों में प्रयोग किया है। इस पुस्तक से हिन्दी के मुहावरों के प्राचुर्य का पता लगाया जा सकता है।

हिन्दी की विभिन्न बोलियों—भोजपुरी, ब्रज, अवधी, बुन्देलखण्डी आदि—में हजारों की संख्या में मुहावरे उपलब्ध होते हैं जो नितान्त मौलिक हैं। केवल भोजपुरी में ही सैकड़ों ऐसे मुहावरे हैं जो खड़ी बोली हिन्दी में नहीं पाये जातेः जैसेः—

१. पाताल खिलना—बहुत दूर चला जाना।
२. हाथ में दही जमाना—मारने पर भी क्रुद्ध न होकर चुप रहना।
३. हाथ झुलावत आना—असफल होकर लौटना।
४. हाँका हाँकी बदना—प्रतिस्पर्द्धा करना।
५. लग्गा लगाना—किसी काम को प्रारम्भ करना।

मुहावरों का प्रयोग बड़ा ही व्यापक है। हमारे जीवन का कोई ऐसा कार्य नहीं जिसके वर्णन में मुहावरों प्रयोग न होता हो। हजारों वर्षों से बोलचाल में बार-बार आते रहने से मुहावरे मनुष्य जीवन के पक्के साथी बन गये हैं। वे मानव की गति, क्रिया, अनुभूति, उसके शरीर के अंग-उपांगों, भोजन के पदार्थों, घर-गृहस्थी के काम-काज, प्रकृति के विभिन्न तत्व—आकाश, आग, हवा, पानी और पृथ्वी—दिन-रात, पशु-पक्षी, पेड़-पौधों और जीव-जन्तु सभी से सम्बन्ध रखते हैं। कहने का आशय यह है कि स्थावर और जंगम जितनी सृष्टि है उन सभी से इनका सम्बन्ध है।

मुहावरों की विशेषताएँ—(१) मुहावरों की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यह किसी वाक्य का अंगीभूत बन कर रहता है। जैसे 'आग लगाना' एक मुहावरा है। परन्तु इसकी कोई स्वतन्त्र सत्ता नहीं है। जब तक इसका किसी वाक्य में प्रयोग नहीं होता तब तक इसका कोई अर्थ नहीं

Scanned with CamScanner

है। परन्तु जब हम यह कहते हैं कि 'वह आग लगाकर तमाशा देखने लगा' तब इसका अर्थ होता है झगड़ा लगाना।

(२) मुहावरा अपने मूल रूप में ही सदा प्रयुक्त होता है। यदि इसमें आये हुए शब्दों के पर्यायवाची शब्दों का प्रयोग किया जाय तो मुहावरा नष्ट हो जाता है। जैसे 'कमर टूटना' एक मुहावरा है। परन्तु इसके स्थान पर इसके पर्याय के प्रतिपादक 'कटिभंग होना' लिखें तो यह पूर्वोक्त अर्थ का द्योतक कदापि नहीं हो सकता। इसी प्रकार 'हाथ धोना' मुहावरा है, परन्तु 'हस्त प्रक्षालन' का प्रयोग करने पर अभीष्ट अर्थ की प्राप्ति हमें नहीं हो सकती।

(३) मुहावरे का वाच्यार्थ से विशेष सम्बन्ध नहीं होता। लक्ष्यार्थ के द्वारा ही अभीष्ट अर्थ की सिद्धि होती है। उदाहरण के लिए 'गड़े मुर्दे उखाड़ना' इस मुहावरे को लीजिए। इसका अभिधेयार्थ है दफनाये गए मुर्दे की कब्र खोदना, परन्तु इसका वास्तविक अर्थ है दबी दबायी बात को फिर से उठाना। इसी प्रकार 'लड़ाई में काम आना' का अर्थ लड़ते-लड़ते मर जाना है, न कि लड़ाई के काम में उपयोगी होना।

जन-जीवन का चित्रण—मुहावरों में जनता के जीवन की झाँकी देखने को मिलती है। साथ ही साधारण प्रथाओं, रूढ़ियों और परम्पराओं का उल्लेख इनमें पाया जाता है। साथ ही साधारण जनता की आर्थिक दशा कैसी थी, इस पर भी प्रकाश पड़ता है। इतिहास की अनेक टूटी और बिखरी हुई कड़ियाँ भी इनकी सहायता से जोड़ी जा सकती हैं। भारतीय संस्कृति का दर्शन भी हमें मुहावरों में मिलता है। इन दृष्टियों से इनका महत्त्व अत्यधिक है।

जनता की आर्थिक स्थिति के परिचायक कुछ मुहावरों को लीजिए। 'गरीबी में आटा गीला' एक मुहावरा है। गरीब के पास थोड़ा सा आटा होता है। यदि सानते समय वह गीला हो जाय, तो उसकी रोटियाँ नहीं बन सकतीं और उसे भूखा ही रहना पड़ेगा। इसी से जब किसी कष्ट के बाद दूसरा कष्ट आ पड़ता है तब इस मुहावरे का प्रयोग किया जाता है। दूसरा मुहावरा है 'सत्तू बाँधकर पीछे पड़ना'। देहात के लोग सत्तू का उपयोग बहुत करते है। जब वे कहीं बाहर यात्रा करते हैं तब साथ मे सत्तू बाँधकर ले जाते हैं, जिससे उन्हें भोजन सदा तैयार मिलता है और इस प्रकार समय की काफी बचत होती है। परन्तु यह गरीबों का ही भोजन है। 'पेट काटना' भी मुहावरा है, जिसका अर्थ है धन की कमी से जान-बूझ कर कम खाना; जैसे—मोहन ने पेट काट कर अपने पुत्र को पढ़ाया-लिखाया।

सामाजिक प्रथाओं का चित्रण इन मुहावरों में अधिकता से हुआ है। 'छीपा बजाना' एक भोजपुरी मुहावरा है। जिस समय किसी के घर पुत्र पैदा होता है उस समय प्रसन्नता के कारण थाली बजायी जाती है। पुत्री के जन्म पर थाली नहीं बजायी जाती। अतः 'छीपा बजाना' पुत्र की उत्पत्ति का द्योतक है। विवाह तथा कथा आदि में एक साथ ही स्त्री-पुरुष मण्डप में बैठते हैं। उस काम में एकाग्र चित्त होकर बैठना होता है। अतः 'चौका बैठना' यह मुहावरा इस घटना की

Scanned with CamScanner

और संकेत करता है।

स्त्री-पुरुष का विवाह होते समय दोनों के कपड़ों को लेकर आपस में गाँठ बाँध देते हैं। यह दम्पत्ति के अभिन्न प्रेम का द्योतक है। इस अर्थ को द्योतित करने वाला मुहावरा है 'गठ जोड़ाव करना'। भोजपुरी में एक दूसरा मुहावरा है 'गोतरुचार करना' जिसका अभिप्राय है, गाली-गलौज करना। यह संस्कृत के गोत्रोच्चारण का अपभ्रंश रूप है। विवाह के समय वर-कन्या की वंशावली का वर्णन वैदिक किया करते हैं जिसे गोत्रोच्चारण कहते हैं। इसीलिए जब कोई किसी के बाप, दादे का नाम लेकर गाली देने लगता है तब इस मुहावरे का प्रयोग किया जाता है।

विवाह के पश्चात् कन्या का भाई मिट्टी के बड़े मटके—जिसे कुण्डा कहते हैं—में मिठाई भरकर बहिन के घर आता है। इससे सम्बद्ध मुहावरा है 'कुण्डा लेकर आना' जिसका अभिप्राय है कोई सौगात लेकर पधारना।

'घंट बाँधना' भी मुहावरा है जो उस प्रथा को द्योतित करता है जो मृत्यु के पश्चात् जलांजलि देने के लिए पीपल के पेड़ में मटका बाँधकर की जाती है।

स्त्रियों के व्रतों का उल्लेख भी कुछ मुहावरों में पाया जाता है। स्त्रियाँ कार्तिक शुक्ल द्वितीया—जिसे भ्रातृ द्वितीया कहते हैं—के दिन 'गोधन' की गोबर की मूर्ति बना कर उसे ओखल में खूब कूटती हैं। इसी प्रथा की ओर संकेत करता हुआ यह मुहावरा है 'गोधन कूटना' जिसका अर्थ है खूब पीटा जाना।

कुछ कहावतों में पौराणिक कथाओं का उल्लेख पाया जाता है। 'चउथी के चान देखल' एक भोजपुरी मुहावरा है, जिसका अभिप्राय है दोष रहित मनुष्य को व्यर्थ में कलंकित करना। भाद्र मास की शुक्ला चतुर्थी को चन्द्रमा का दर्शन निषिद्ध माना जाता है। एक पौराणिक कथा के अनुसार भगवान् श्री कृष्ण ने इस दिन चन्द्र दर्शन कर लिया था। फलस्वरूप उन्हें मणि चुराने का दोष लगा। इसी पौराणिक कथा की ओर उपर्युक्त मुहावरा संकेत करता है। 'कपारे पर बरह्म चढ़ल' मुहावरे का अर्थ है अत्यन्त क्रोधित होना। अकाल मृत्यु से मरा हुआ ब्राह्मण ब्रह्म कहलाता है जो भूतों की एक योनि है। जब वह किसी के सर पर चढ़ता है तब आविष्ट व्यक्ति हाथ पैर पीटता हुआ बक्-बक् करने लगता है। वह क्रोध में आकर अनाप-सनाप बकता है। अतः इसका अभिप्राय है क्रोध में आकर असम्बद्ध प्रलाप करना।

ऐतिहासिक तथ्यों के ऊपर भी इन मुहावरों से प्रचुर प्रकाश पड़ता है। 'अँगूठा दिखाना' हिन्दी का प्रचलित मुहावरा है जिसका अभिप्राय है इन्कार करना। यह मुहावरा ईस्ट इण्डिया कम्पनी के काल की उन परिस्थितियों की ओर संकेत करता है जिसके कारण ढाके के बारीक मलमल बुनने वाले जुलाहों का अँगूठा काट लिया जाता था। 'कंजड़ भइल' मुहावरा कंजूस होना

Scanned with CamScanner

है। यही पहेली बन जाती है। संस्कृत के प्राचीन ग्रन्थों में रूपकालंकार का सहारा लेकर जिन वस्तुओं का वर्णन हुआ है वे सब इसी कोटि में आयेंगी। हिन्दी के महाकवि सूरदास जी ने अनेक दृष्टिकूपों की रचना की है।[1] जिनका अर्थ समझना टेढ़ी खीर है। इन दृष्टिकूपों को हम पहेली के अन्तर्गत रख सकते हैं।

उत्पत्ति—किसी व्यक्ति की बुद्धि परीक्षा के लिए भी पहेलियों का प्रयोग किया जाता है। भारतवर्ष के मूल निवासियों में मध्यप्रदेश के मँडला जिले में गोंड़, प्रधान तथा बिरहौर जातियों में विवाह के अवसर पर पहेली पूछना (बुझाना) एक आवश्यक कार्य है।[2]

भोजपुरी प्रदेश में विवाह के समय जब वर वैवाहिक विधि के पश्चात् कोहबर में प्रवेश करने लगता है तब घर की स्त्रियाँ उससे पहेलियाँ पूछती हैं जिन्हें छेंका कहा जाता है।[3]

इन पहेलियों का सन्तोषजनक उत्तर देने पर ही वर कोहबर में प्रवेश कर सकता है अन्यथा नहीं। यह प्रथा सम्भवतः वर की विद्वत्ता अथवा बुद्धि की परीक्षा लेने के लिए ही की जाती है।

पहेलियों की उत्पत्ति का तीसरा कारण मनोरंजन भी है। किसान को दिन भर कठोर परिश्रम करते रहने से तनिक भी अवकाश नहीं मिलता। भीषण श्रम से उसका शरीर और मस्तिष्क चूर-चूर हो जाता है। अतः रात्रि में भोजन आदि से निवृत्त होकर वह इन पहेलियों को बुझाकर अपने दिल और दिमाग को ताजा करता है। वह थोड़ी देर के लिए शारीरिक श्रम को भूल जाता है तथा शान्ति और सुख का अनुभव करता है। गाँवों में जहाँ सिनेमा नहीं है, जहाँ थियेटर का अत्यन्त अभाव है, जहाँ मनोरंजन के कोई भी अन्य साधन उपलब्ध नहीं हैं, वहाँ ये पहेलियाँ इन कृषकों के मनोरंजन के अनन्यतम साधन हैं।

Scanned with CamScanner

पहेलियों के प्रकार—पहेलियों के अनेक प्रकार हैं। जन-जीवन से सम्बन्ध रखने वाली सभी वस्तुओं के विषय में पहेलियाँ पाई जाती हैं। इनको साधारणतया सात भागों में विभक्त किया जा सकता है।

(१) खेती सम्बन्धी पहेलियाँ, (२) भोज्य पदार्थ सम्बन्धी पहेलियाँ, (३) घरेलू वस्तु सम्बन्धी पहेलियाँ, (४) प्राणि सम्बन्धी पहेलियाँ, (५) प्रकृति सम्बन्धी पहेलियाँ, (६) शरीर सम्बन्धी पहेलियाँ, (७) प्रकीर्ण पहेलियाँ।

इनमें घरेलू और प्राणि सम्बन्धी पहेलियों की प्रधानता है जो घर में प्रयुक्त होने वाली वस्तुओं—जैसे दीपक, मूसल, लोढ़ा, बेलना, खाट, ताला-चाभी, कुर्ता-धोती आदि—के सम्बन्ध में पाई जाती हैं। सुई दैनिक व्यवहार में आने वाली वस्तु है। इसके सम्बन्ध में यह भोजपुरी पहेली कही जाती है।[१]

"हती मोटी गाजी मियाँ, हतवत पोछि।
भागल जाली गाजी मियाँ, धरिहे पोंछि।।"

ग्रामीण लोग कन्द (शकरकन्द) का प्रयोग अधिक किया करते हैं। गरीबों की उदरदरी की पूर्ति का यह अनन्य साधन है। इसके सम्बन्ध में निम्न पहेली प्रसिद्ध है—

लाल छड़ी भुँइ में गड़ी।
सासु ले पतोहि बड़ी।। (कन्द)

कन्द सफेद और लाल दोनों तरह का होता अतः उसे 'लाल छड़ी' कहा गया है। मूली के सम्बन्ध में यह उक्ति कितनी सुन्दर है।

एक बाग में ऐसा हुआ।
आधा बगुला आधा सुआ।। (मूली)

लकड़ी काटने वाली आरी की उपमा पहेलियों में चिड़िया से दी गई है। कितनी सुन्दर पहेली है—

"एक चिरइया चटनी, काठ पर बइठनी।
काठ खाले गुबुर गुबुर, हगेले भुरूकनी।।"

प्रकृति के विभिन्न पदार्थों को लेकर भी पहेलियाँ उपलब्ध होती हैं। आकाश के सम्बन्ध में यह पहेली बड़ी प्रसिद्ध है।[२]

"एक थाल मोतिन से भरा,
सबके सिर पर औंधा धरा।
चारों ओर थाल वह फिरै,
मोती उससे एक न गिरै।।"

Scanned with CamScanner

बादल के हाथ-पैर नहीं होता फिर भी वह पहाड़ पर चढ़ जाता है। इसका उल्लेख नीचे की पहेली में किया गया है।[1]

"बेहाथ के बेगोड़ क पहाड़ चढ़ा जाथै।
देखा तो बनखंडी बाबा, कौन जनारौ जाथै।।" (बादल)

बबूल गाँवों में बहुत पाया जाता है। पहेलियों में उसका भी स्मरण किया गया है—

"सावन फूलै, चैत में फरै, ऐसो रूख बोई का करै।
घारी कहै सवारी खेरे, है नियरे पर पहौ हेरे।।"

जैसा कि पहले लिखा जा चुका है इन पहेलियों का प्रधान उद्देश्य मनोरंजन है। बहुत सी ऐसी पहेलियाँ हैं जिनमें हास्य उत्पन्न करने के लिए शब्दों की योजना की गई है। ढेकुल—जिसके द्वारा कुयें से जल निकाल कर खेत सींचा जाता है—के सम्बन्ध में यह भोजपुरी पहेली कही गई है।[2]

"आकाश गइले चिरई, पाताल गइले बच्चा।
हुचुक्क मारे चिरई, पियाब मोर बच्चा।।"

व्रज की यह पहेली भी ऐसी ही है जिसके पढ़ने से हास्य रस की उत्पत्ति होती है।[3]

"चार पग की चापड़ चुप्पो, वापै बैठी लुप्पो।
आई सप्पो लै गई लुप्पो, रह गई चापड़ चुप्पो।।"

इसका भाव यह है कि भैंस पर मेढ़की बैठ गई और मेढ़की को चील लेकर उड़ गई। यहाँ पर चापड़ चुप्पो भैंस के लिए, लुप्पो मेढ़की के लिए और सप्पो चील के लिये प्रयुक्त हुये हैं।

परन्तु शुद्ध मनोरंजन के अतिरिक्त कुछ पहेलियों में गणित सम्बन्धी कुछ प्रश्न भी उपलब्ध होते हैं जिनको बताने में बालकों को दिमागी कसरत करनी पड़ती है।[4]

उदाहरण—

"चार आना बकरी आठ आना गाय।
चार रुपया भैंस बिकाय, बीसै रुपया बीसै जीव।।"

अर्थात बीस रुपया में बीस जानवर खरीदने हैं जिनका मूल्य उक्त प्रकार से है। इसका उत्तर है—तीन भैंस, पन्द्रह गाय और दो बकरी।

एक दूसरी पहेली है जिसमें एक मन अन्न चार बाटों से पूरा-पूरा तौलना है जिससे किसी प्रकार कमी न पड़ने पाये।[5]

Scanned with CamScanner

"एक मन दाना चारि बाट।
जितना तौलो परै न घाट।।"

(उत्तर—१, ३, ६, २७ सेर के बाट)

किसी-किसी पहेली में पौराणिक उपाख्यानों की ओर संकेत रहता है। जब तक व्यक्ति उस कथा को नहीं जानता तब तक उत्तर देने में असमर्थ रहेगा—

"स्याम बरन मुख उज्ज्वल कित्ते?
रावन सीस मदोदरि जित्ते।
हनुमान पिता करि लैहों,
तब राम पिता भरि दैहों।।"

प्रश्न—उड़द का क्या भाव है ?

उत्तर—जितना रावण और मन्दोदरी का सिर है अर्थात् १०+१=११सेर।

प्रश्न—मैं हवा से फटक कर (साफ कर) लूँगा।

उत्तर—तब पिता (दश+रथ) के बराबर १० सेर दूँगा।

इस पहेली का उत्तर देने में यह जानने की आवश्यकता है कि राम और हनुमान के पिता कौन थे तथा रावण के कितने सिर थे।

किसी जाति विशेष की विशेषताओं की ओर भी कहीं-कहीं संकेत किया गया है। ब्राह्मणों की भोजन-प्रियता प्रसिद्ध है। मथुरा के चौबे लोगों ने इस क्षेत्र में काफी कीर्ति कमाई है।

अगहन पइठ चैत के प्याट,
तेहि पर पण्डित करैं झप्याट।
है नेरे पैहो ना हेरे,
पण्डित कहे विगहपुर केरे।

इसका उत्तर है—कचौरी। एक भोजपुरी कहावत से इस कथन की पुष्टि होती है जिसमें कहा है कि ब्राह्मण लोग चिउड़ा दही खाने के लिए चौबीस मील तक चले जाते हैं और यदि पूरी खाने को मिले तो छत्तीस मील तक धावा बोलते हैं—

"चिउड़ा दही बारह कोस,
लुचुई अठारह कोस।"

पहेलियों में आदर्श प्रेम की अभिव्यक्ति भी सुन्दर रीति से की गई है। पति की मृत्यु पर स्त्रियों के सती होने का उल्लेख बहुत पाया जाता है, परन्तु इनमें 'बत्ती' के सती होने का वर्णन हुआ है।

"नाजुक नारि पिया संग सोती,
अंग सो अंग मिलाय।
पिय को बिछुड़त जानि के,
संग सती हो जाय।।"

Scanned with CamScanner

इसका उत्तर है—बत्ती और तेल।

इन पहेलियों के लेखकों का नाम कहीं उपलब्ध नहीं होता। किसी-किसी में सवासी खेरे के घासीराम का नाम उपलब्ध होता है। यथा—

"हाथी हाथ हथिनियाँ काँधे, जात कहाँ हौ बकुचा बाँधे।
घासी कहै सवासी खेरे, है नियरे पै पैहो हेरे।।"

हिन्दी की प्रत्येक बोली में हजारों की संख्या में पहेलियाँ पाई जाती हैं परन्तु इनके कर्त्ता का कुछ पता नहीं चलता। पहेलियों का निर्माण आजकल भी जारी है। आधुनिक वैज्ञानिक आविष्कारों को लेकर अनेक पहेलियों की सृष्टि हुई है।

Scanned with CamScanner